श्री विन्ध्येश्वरी जी की आरती

सुन मेरी देवी पर्वतवासिनी, कोई तेरा पार न पाया।

पान सुपारी ध्वजा नारीयल, ले तेरी भेंट चढ़ाया।

सुवा चोली तेरी अंग विराजे, केसर तिलक लगाया।

नंगे पग मां अकबर आया, सोने का छत्र चढ़ाया।

ऊँचे पर्वत बन्यो देवालय, नीचे शहर बसाया।

सतयुग,द्वापर,त्रेता मध्ये, कलयुग राज सवाया।

धूप दीप नैवेद्य आरती, मोहन भोग लगाया।

ध्यानू भगत मैया तेरे गुण गाया, मनवांछित फ़ल पाया।

www.totalbhakti.com